REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

स्मृति गन्थ (मनु, याज्ञवल्क्य) में शिक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन

मिथिलेश कुमार शुक्ल[1] , डॉ. चारू शर्मा[2]
[1]शोधार्थी– हिमगिरि जी विश्वविद्यालय, देहरादून.
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर – हिमगिरि विश्वविद्यालय, देहरादून.

सारांशः–

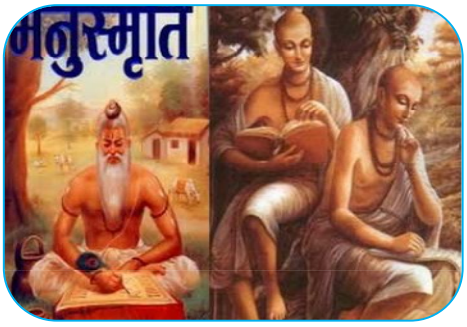

मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति जो धर्मशास्त्र के नाम से प्रचलित है यह ई सन् के प्रारम्भ में लिखित भारतीय संस्कृति शिक्षा की आचार संहिता रही है जिससे इस देश की सामाजिक चिन्तन धारा को दिशा मिला। यह ग्रन्थ न सिर्फ समाजशास्त्र, संस्कृत, कानून के ग्रन्थ रहे है अपितु अनेको शैक्षिक उपबन्ध भी दिये गये है। इनसे पारम्परिक व्यवहारो को दिशा मिलती है। शिक्षा का पाठ्यक्रम सामान्य–सांस्कृतिक एव व्यावसायिक रूप में प्रचलित था। शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक विकास था। स्वधर्म का पालन प्रमुख था। धर्मशास्त्र में शिक्षा के अनेक पक्ष–संस्कार, गुरू, पाठ्यक्रम, अनुशासन शिक्षा का वर्ष, अवकाश, ज्योतिष शिक्षा चिकित्सा शिक्षा, कानून की शिक्षा, स्त्री शिक्षा सभी की विवेचना की गयी है। गुरू–शिष्य सम्बन्ध पर विशेष बल दिया गया है। यहाँ शिक्षा की औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनो विधाए थी, जिसमें कुछ समय अध्ययन अध्यापन में जाता था तो कुछ समय गुरू सेवा में लगता था। अतः शिष्य का सर्वांगीण विकास होता था। अतः यह ऐसा ग्रन्थ है जिसके शैक्षिक चिन्तन में दार्शनिकता का पुट दिखाई देता है। अतः स्मृति और शिक्षा नामक विधा की स्थापना होती है।

संकेतशब्दः– ' धर्मशास्त्र ' स्मृतिग्रन्थ ' स्मृति और शिक्षा ' शिक्षा की विधाये ' पारम्परिक व्यवहार

1–अध्ययन का विषय

स्मृतिग्रन्थ (मनु, याज्ञवल्क्य) में शिक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन

2–अध्ययन की पृष्ठभूमि या प्रस्तावना

शिक्षा आदिकाल से ही मनुष्य के पूर्ण–विकास का महत्वपूर्ण साधन रही है। 'शिक्षा' शब्द स्वयं इतना अस्पष्ट है कि इसके व्यापक एवं सीमित दोनो अर्थ हो सकते है। व्यापक अर्थ में शिक्षा मनुष्य के आत्मिक विकास की गति है, जो उसके जन्म से लेकर अनुकरण श्रवण, अध्ययन, मनन तथा पारस्परिक सम्बन्ध–स्थापना के द्वारा जीवन के अन्त तक चलती रहती है। यदि व्यक्ति चाहे, तो वह अपने जीवन के अन्तिम समय तक विद्यार्थी रह सकता है।[1] वस्तुतः विद्यार्थी जीवन एक संस्कारिक जीवन का परिचायक है और संस्कार मृत्यु तक होना रहता है इसलिए समाज सम्बन्ध–स्थापन सुचारू रूप से होता रहे इसके लिए शिक्षा एवं विद्या सदैव सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। यह शिक्षा की अनौपचारिक विधा कहलाती है। सीमित अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य उस अवस्था–विशेष से है, जिस अवधि में कोई मनुष्य अपने गुरू अथवा–
शिक्षा–संस्थान में रहकर अपनी प्रगति के हेतु अपेक्षित उपदेश (संस्कार) प्राप्त करता है। प्रायः

शिक्षा का आधुनिक समय में इसी संस्कार से अभिप्राय है, जो कोई भी व्यक्ति जीवन संग्राम में प्रविष्ट होने के पूर्व विभिन्न शिक्षा–संस्थानों में प्राप्त करता है। इसमें सब कुछ निश्चित रहता है। एक स्थान (विद्यालय), एक निश्चित समय पाठ्यक्रम इत्यादि। यह शिक्षा की औपचारिक विधा कहलाती है।

वैदिक युग से लेकर अब तक शिक्षा का महत्व स्पष्ट है। स्वयं 'वेद' का अर्थ है–'ज्ञान'। शिक्षा के द्वारा मस्तिष्क और बुद्धि का विकास होने की स्थिति में ही शिक्षित व्यक्ति अन्य मनुष्यों की तुलना में श्रेष्ठ माना जाता है।[2] विधा को अमृत प्राप्त करने का साधन वेदों में ही स्वीकार किया गया है।[3] विद्या से ही मुक्ति प्राप्त होती है तथा मनुष्य शिल्प में निपुणता प्राप्त करता है।[4] उपनिषदों में विद्या और अविद्या का पार्थक्य स्पष्ट कर विद्या का आश्रय ग्रहण करने तथा अविद्या से दूर रहने का उपदेश किया गया है।[5]

1. यावज्जीव धीते विप्रः
2. अक्षावन्तः कर्मनो सखायों भवन्तः जवेषु असमाय भूकः–ऋग्वेद–1–7–17
3. विद्ययामृत भश्नुवे–यजुर्वेद–40–14
4. सा विद्या या विमुक्तये। विद्यन्या शिल्पनेपुष्यम–विष्णु पुराण–1–19–41
5. दूरभेते विपरीते विषूची अविद्या या च विधेति ज्ञाता–कठोपनिषद्–2–4

विद्या न केवल आत्मिक वरन् समस्त जीवन के तत्व का सम्यक बोध कराने की दृष्टि से भी उपयोगी मानी जाती है। इस रूप में मनुष्य का सम्पर्ण ज्ञान शिक्षा का पर्याय है और ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है।[1] तथा महाभारत में विद्या को सर्वश्रेष्ठ का नेत्र कहा गया है।[2]

नीति सहित्य में तो विद्या की प्रशंसा में उक्तियों की भरमार है। नीतिकारों की दृष्टि में विद्या इहलोक एवं परलोक दोनों के साधन के रूप में है। सांसारिक जीवन में यह माता–पिता और स्त्री की भांति हित करने वाली तथा लक्ष्मी एवं कीर्ति की वृद्धि करने वाली है। भर्तृहरि ने 'नीतिशतक' में इसी कारण विद्यारहित मनुष्य को पशु के समान माना है।[3]

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि शिक्षा, विद्या और ज्ञान इन तीनों शब्दों का प्रयोग प्राचीन साहित्य में पर्यायवाची के रूप में प्रयुक्त होता था। यें तीनो शब्द एक ही भाव को प्रकट करते थे।

आज यह एक सर्वमान्य सत्य है कि प्राचीन भारतीय साहित्य व संस्कृति में शिक्षा का पर्याप्त विवरण है। यह इतना विशाल है कि या तो इसके किसी कालखण्ड का अध्ययन किया जा सकता है, या किसी एक दो ग्रन्थ का अध्ययन करना भी कठिन कार्य है। अतः शोधकर्ता ने प्राचीन साहित्य के केवल दो ग्रन्थों–मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति का चयन किया है। यह दोनो ग्रन्थ अपने आप में अद्वितीय है। यह एक ऐसे कालखण्ड का प्रतिनिधित्व करती है, जो वैदिक, उत्तरवैदिक तथा सूत्रकाल के बाद एवं ईस्वी सन् के प्रारम्भ के समय की व्यवस्था को उद्दृत करती है। इसमें विद्या की इतनी महत्ता बतायी गयी है कि विद्या के कारण ब्राह्मण की विशेषता स्पष्ट हो गयी और वह ब्राह्मण हो गया, अन्यथ जन्म से तो सभी शूद्र होते है।[4]

1. ज्ञानं तृतीय मनुजस्य नेत्रं–सुभाषित रत्न सन्दोह–पृष्ठ–194
2. नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति सत्यमं तपः–महाभारत–12–339–6
3. विद्याविहीनः पशुभि समाना–नीतिशतक–16
4. जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्चेत। विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभीः श्रोतिय एवं च।–मनुस्मृति–2–169, याज्ञवल्क्य–1–2–39 अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति जन्मना शूद्र होता है। संस्कारो से द्विज कहा जाता है, विद्या से विप्रत्व प्राप्त करता है तथा तीनो के द्वारा 'श्रोतिय' कहा जाता है। –के. सी. श्रीवास्तव प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ–167

शोधकर्ता को विश्वास है कि मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में शिक्षा के वे सभी मौलिक तत्व एवं सिद्धान्त विद्यमान है जिसकी सहायता से ईस्वी सन् के प्रारम्भ के भारतीय शिक्षा और दर्शन तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा की जा सकती है।

3.अध्ययन की आवश्यकताः–

प्रस्तुत शोधकार्य की आवश्यकता शोधार्थी को आभासित हो रही थी। चूँकि हमारा वर्ष 2007–08 में डा० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा में एम. एड. का लघु शोध "मनुस्मृति और शिक्षा" नाम से प्रस्तुत किया जा चुका है। पुनः अब उसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए विस्तृत शोधकार्य की आवश्यकता प्रतीत हो रही है।

वर्तमान में केवल संस्कृत विषय के अध्येता स्मृति ग्रन्थों की विवेचना करते है। परन्तु शिक्षा दर्शन की शाखा में वैदिक दर्शन एवं शिक्षा, उपनिषद दर्शन एवं शिक्षा, षटदर्शन एवं शिक्षा जैसे विषयो की विवेचना सभी शिक्षा दार्शनिक कर रहे है। उसी में स्मृति दर्शन एवं शिक्षा, पुराण दर्शन और शिक्षा, महाकाव्य दर्शन और शिक्षा जैसी आवश्यकता प्रतीत हो रही है। उसी एक कड़ी के रूप में आंशिक पूर्ति हेतु स्मृतिग्रन्थ और शिक्षा विषय की आवश्यकता के तहत इस विषय को विस्तार देना चाहते है।

वस्तुतः शिक्षाशास्त्र में वैदिक दर्शन, उपनिषद दर्शन एवं षटदर्शन ही विवेचित किये गये है। इसमें स्मृति ग्रन्थ, पुराण एवं महाकाव्य को जोड़ने एवं पढ़ने–पढ़ाने की परम्परा को बढ़ाने हेतु इस विषय का चुनाव किया गया है। अभी तक संस्कृत विषय के अतिरिक्त केवल इतिहास विषय और राजनीति विषय में इन ग्रन्थों को स्थान मिला है। परन्तु मध्यकालीन फारसी चश्मे से पहलें केवल वही पारम्परिक स्कूल, कॉलेज जो गुरूकुलो की पूर्वपीठिका पर स्थापित हुए थे मौर्य एवं गुप्त–गुप्तोत्तर काल में, वहाँ भी शिक्षा देने में ऐसे ग्रन्थो का स्थान था। इसलिए शिक्षाशास्त्र एवं शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों में स्मृतिग्रन्थों को समाहित किया जा सके। इसीलिए इन पर शैक्षिक दृष्टि से शोध की आवश्यकता प्रतीत हो रही है।

4.अध्यापित शोध विषय–"स्मृति ग्रन्थ (मनु, याज्ञवल्क्य) में शिक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन" के कठिन शब्दो का परिभाषीकरण

अध्यापित विषय में स्मृति ग्रन्थो (मनु याज्ञवल्क्य) में दी गयी शैक्षिक व्यवस्था या प्रबन्ध का समीक्षात्मक अध्ययन (Critical study) करने के अन्तर्गत कुछ ऐसे कठिन शब्द है जिसकी विवेचना करना समीचीन प्रतीत होता है–

- श्रुति
- स्मृति
- धर्म
- ग्रन्थ या शास्त्र
- धर्म शास्त्र

❖ 5. अध्ययनन का उद्देश्य

❖ प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य है–

- 1. मनुस्मृति में आचार्य मनु द्वारा साक्षात्कृत शिक्षा सिद्धान्तो एवं तत्वो का अध्ययन करना।
- 2. याज्ञवल्क्यं स्मृति में महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा साक्षात्कृत सिद्धान्तों एवं तत्वो का अध्ययन करना।
- 3. मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृतिद्वय के शिक्षा सिद्धान्तों एवं तत्वो के आधार पर भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव देना।
- 4. मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृतिद्वय से शिक्षा के ऐसे उद्देश्यो का निर्धारण एवं विवेचन करना जो भारतीय शिक्षा प्रणाली में बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सके।
- 5. मनु एवं याज्ञवल्क्य द्वारा शिक्षा के विविध पहलुओ की विवेचना करना जो शिक्षा के बहुआयामी पक्षो को दर्शा सके।

❖ 6. अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमा

❖ प्रस्तुत अध्ययन मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति तक सीमित है। स्मृति ग्रन्थो की अनेकानेक रचना कृतियाँ है जिनमें केवल इन्ही दो का चयन किया जा सका है क्योकि ये दो प्रारम्भिक स्मृतियाँ है एवं इन्ही दोनों के अनेकानेक विषयो को अन्य स्मृतियो में लिया गया है।

❖ शोध की परिसीमा में मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के भी शिक्षा सम्बन्धी सूक्तियो का चयन किया गया है।

❖ 7. अध्ययन की उपकपना या अवधारणा

❖ मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में शिक्षा के सिद्धान्त एवं तत्व विद्यमान है, जिनके आधार पर हम भारतवासियों की आकांक्षाओ एवं आवश्यकताओं के अनुरूप भारतीय शिक्षा दर्शन तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा का निर्धारण कर सकते है।

❖ 8. अध्ययन की विधि

❖ ह्विटनी के वर्गीकरण के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन को दार्शनिक शोध के अन्तर्गत रखा जा सकता है। अध्यापित विषय का सम्बन्ध गुणात्मक शोध के अन्तर्गत आता है। इसमें किसी आंकिक सूचकांक का प्रयोग नही किया जा सकता है। चरों को मात्रा में नही माप सकते है। परिकल्पना का औपचारिक ढ़ंग से परीक्षण किया जायेगा जिसके आधार पर उसे स्वीकार या अस्वीकार करने सम्बन्धी मत शोधकर्ता का मत होगा। इसमें मानवीयता एवं सत्य के प्रति आग्रह किया गया है। उचित प्रविधियो तथा उपकरणो के विकास का आभाव है इसलिए सामान्यीकरण की संभावना कम है। परन्तु फिर भी शिक्षा में परिवर्तन लाने एवं उसका स्तर ऊँचा करने हेतु दार्शनिक चिन्तन विधि का सहारा लिया गया है।

❖ 9. अध्ययन की प्रक्रिया

❖ प्रस्तुत अध्ययन की शोध प्रक्रिया में तीन पद है– 1. तथ्यो का रेखांकन 2. तथ्यो का सारणीयन और 3. तथ्यो का विवेचन।

❖ 1. तथ्यो का रेखांकन :–

❖ शोधकर्ता मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के समस्त सूक्तो को गंभीरतापूर्वक पढ़कर उसमें वर्णित शैक्षिक कथनो को रेखांकित किया जायेगा।

❖ 2.तथ्यो का सारणीयनः–

❖ तत्पश्चात शोधकर्ता ने रेखांकित कथनो को तीन भागो में वर्गीकृत किया जो निम्न प्रकार है–

❖ 1. मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में शिक्षा के दार्शनिक पक्ष–ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा, मूल्यमीमांसा

❖ 2. शिक्षा के उद्देश्य

❖ 3. शिक्षा के विविध पक्ष

❖ 3. तथ्यो का विवेचनः–

❖ पूर्वोक्त विधि से मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के शैक्षिक कथनो का रेखांकन एवं सारणीयन करने के उपरान्त प्रत्येक तथ्यो की व्याख्या पृथक–पृथक की गयी और व्याख्या के अन्त में उभरते हुए निष्कर्षो की ओर संकेत किया गया है।

10. अध्ययन का निष्कर्ष

मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के अध्ययन से प्राप्त शैक्षिक विचार मूलतः तीन शैक्षिक शीर्षको में विभक्त किये गये है–

1. मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में शिक्षा के दार्शनिक पक्ष–तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा का निष्कर्ष एवं सारांश

2. मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में शिक्षा का उद्देश्य एवं व्याख्या सम्बन्धी निष्कर्ष एवं सारांश

❖ सभी उद्देश्यो का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

3. मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में शिक्षा के अन्य पक्ष एवं सम्बन्धी निष्कर्ष एवं सारांश

❖ शिक्षा के सभी विविध पक्षो का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

11. अध्ययन की सार्थकता एवं सुझाव

मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति जो प्रायः धर्मशास्त्र के नाम से जाने जाती है और ये ईस्वी सन् के प्रारम्भ से लेकर अंग्रेजी शासन व्यवस्था से पूर्व भारतीय नियम कानून का आधार रही है। इन ग्रन्थो के अध्ययन की सार्थकता वर्तमान शिक्षा के भारतीयकरण एवं पारम्परिक व्यवहारो को दिशा निर्देशित करने में प्राप्त होती है। इसलिए कुछ सुझावो पर गौर करना चाहिए–

1. भारतीय शिक्षा का पाठ्यक्रम दो भागो में विभक्त होना चाहिए– 1. सामान्य एवं सांस्कृतिक पाठ्यक्रम 2. व्यावसयिक पाठ्यक्रम। सामान्य पाठ्यक्रम में भारतीय धर्म, संस्कृति, पर्यायवरण, इतिहास, अर्थव्यवस्था, नीति–राजनीति, जीवन पद्धति सम्मिलित हो। व्यावसायिक पाठ्यक्रम में कृषि, वार्ता, पशुपालन, वाणिज्य, कला, विज्ञान, शिक्षक प्रशिक्षण का समावेश हो।
2. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य स्मृति ग्रन्थो में बौद्धिक विकास दिया गया है। बौद्धिक विकास के बिना ज्ञानार्जन संभव नही है।
3. मनुष्य की शिक्षा सामाजिक उत्तरदायित्वो के निर्वहन के लिए होनी चाहिए और मनुष्य स्वधर्म, कर्म का कर्तव्य करते हुए समाज हित में कार्य करना चाहिए।
4. शिक्षा में गुरू, आचार्य, शिक्षक का विशेष महत्व है साथ ही शिष्य भी जिज्ञासु बना रहे।
5. अध्ययन–अध्यापन का कार्य सदैव अधिकारी, सदाचारी, प्रशिक्षित शिक्षको को देना चाहिए क्योंकि वही राष्ट्र निर्माताओ को दिशा एवं दशा देता है।

सुझाव रूप में है कि शोधकर्ता ने केवल मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति का चयन किया है उसमें जो निष्कर्ष निकाल पाये है उसे वेद और शिक्षा, उपनिषद और शिक्षा की तरह शिक्षाशास्त्र के दर्शन विषय में 'स्मृति और शिक्षा' के रूप में स्थान दिया जाय तथा भावी शोधकर्ता अन्य स्मृतियों का विवेचन कर इस आधार सामग्री को विस्तृत करते रहे विशेषकर कलियुग के लिए पाराशर स्मृति को सम्पृक्त किया सकता है।

सन्दर्भ गन्थ सूचीः– मुख्यतः चार प्रकार के स्रोतो का उपयोग हो रहा है–

1. प्राथमिक स्रोतः–

- ❖ मनुस्मृति– (हिन्दी अनुवाद) शिवराज आचार्य चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी 2017
- ❖ 20 स्मृतियाँ– (संपादक) पंड़ित श्रीराम शर्मा आचार्य भाग–1 संस्कृत संस्थान वेदनगर बरेली 1993
- ❖ स्मृति चन्द्रिका– देवणभट्ट, मैसूर विश्वविद्यालय संस्करण
- ❖ याज्ञवल्क्य स्मृति– (हिन्दी व्याख्या) गंगासागर राय चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2017
- ❖ ऋग्वेद– संस्कृत संस्थान वेदनगर बरेली 1993
- ❖ अलबरूनी का भारत– इंडियन प्रेस इलाहाबाद
- ❖ अलबरूनी का भारत– एन. बी. टी. नई दिल्ली 2003
- ❖ याज्ञवल्क्य शिक्षा– (हिन्दी व्याख्या) नरेश झा चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 2017
- ❖ ईषोपनिषद– गीताप्रेस गोरखपुर संवत् 2014
- ❖ पुराण– अग्नि, वायु, गरूण, भागवत, शिव आदि
- ❖ रामायण– गीता प्रेस गोरखपुर
- ❖ महाभारत– गीता प्रेस गोरखपुर
- ❖ अष्टाध्यायी– पाणिनि
- ❖ महाभाष्य– पतंजलि
- ❖ कामसूत्र– (हिन्दी व्याख्या) पारस नाथ द्विवेदी चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी 1999
- ❖ धर्मशास्त्रांक– गीता प्रेस गोरखपुर

2. शोध प्रबन्धः– शोध गंगा एवं शोध गंगोत्री पर उपलब्ध कुछ शोधप्रबन्धो का विश्लेषण

3. शोध पत्रिकाएं–

- ❖ अन्वेषिका–छब्ज्क नई दिल्ली

❖ इतिहास– भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से प्रकाशित भाग–1 एवं 2 में डा० विवेकानन्द झा तथा डा० सुवीरा जायसवाल का लेख 1992–93
❖ इतिहास बोध– आजाद हिन्द फौज फाउण्डेशन, इलाहाबाद (अंक–38 वर्ष–2004) में डा० नीरज श्रीवास्तव का लेख
❖ जर्नल– खण्ड–15 वर्ष–2008, ईश्वरी प्रसाद इतिहास संस्थान इलाहाबाद, डा० पहलाद वर्नवाल का लेख–'संस्कार'।
4. द्वितीयक स्रोतः–
❖ अनुसंधान की पुस्तकें– पी. एन. राय, आर. ए. शर्मा, एच पी. सिन्हा, एस. पी. गुप्ता, एच. के. कपिल अरूण कुमार सिंह के पुस्तकें
❖ शैक्षिक पहलु की पुस्तकें– रामशकल पाण्डेय, आर. एन. स्वरूप सक्सेना, रमन बिहारी लाल, गुरूशरण दास त्यागी इत्यादि की पुस्तकें
❖ सामान्य ऐतिहासिक एवं सन्दर्भित पुस्तकें–
❖ पी. वी. काणे– धर्मशास्त्र का इतिहास, उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1992
❖ प्रो० राधाकुमुद मुखर्जी– हिन्दू सभ्यता, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2014
❖ प्रो० अनंत सदाशिव अल्तेकर– प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी 2014
❖ प्रो० जयशंकर मिश्र– प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना 1974
❖ प्रो० विमल चन्द्र पाण्डेय– प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद 2000
❖ प्रो० आर. एस. शर्मा– प्राचीन भारत का सामाजिक–आर्थिक इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली 2000
❖ प्रो० रामशरण शर्मा– प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
❖ प्रो० ओ. पी. गावा– राजनीतिक चिन्तन (मनु) की रूपरेखा, मयूर प्रकशन, नोयडा
❖ प्रो० कालिका रंजन कानूनगो– दाराशिकोह, गया प्रसाद एण्ड सन्स, प्रकाशन, आगरा